सप्तम् अध्याय

"'रातरानी' नाटक का उद्देश्य।"

७.० " रातरानी " नाटक का उद्देश्य । "

प्रस्तावना :

उद्देश्य नाटक का अत्यावश्यक और महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। बिना किसी उद्देश्य के नाटक हो ही नहीं सकता। मनुष्य अपने निजी जीवन में भी किसी निश्चित उद्देश्य के बिना ठोस कदम नहीं उठाता। उसके सामने कोई न कोई प्रयोजन होता ही है। रचनाकार अपनी कृति का सृजन करते समय किसी शाश्वत घटनाओं, सत्यों का उद्घाटन करता हैं। इस बात को स्पष्ट करने हेतु कृष्णदेव शर्मा का विधान दृष्टव्य है कि...." उपन्यास का उद्देश्य शाश्वत सत्य का उद्घाटन करना हैं, और वह शाश्वत सत्य की परिक्षा का आधार क्या हो ? विद्वानों के अनुसार इस शाश्वत सत्य की परख दो दृष्टियों से की जा सकती हैं - पहली तो यह कि वह सत्य के कितना निकट है, दूसरी यह कि इसमें नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा किस सीमा तक हुई है।"[1] उपन्यास हो या नाटक है तो हिन्दी साहित्यिक विधा ही। तो इसमे शाश्वत घटनाओं के साथ-साथ कल्पना का भी सहारा लिया जाता है। जिससे मनोरंजन भी हो सके। साहित्य मनोरंजन के लिए भी लिखा जाता है। मनोरंजन मनुष्य के सहज कार्य व्यापारों और उसके आपसी परस्पर सम्बन्धों तथा सहजीवन के बीच होता है।

लेखक नाटक लिखता है और यह लिखना भी अपने में एक उद्देश्य ही है। नाटककार नाटक लिखते समय इतिहास, पुराण, अपनी अनुभूतियाँ तथा कल्पना का सहारा लेता है। वह अपने सिद्धान्त अथवा उद्देश्य प्रत्यक्ष रूप से न कर वार्तालाप या घटनाओं द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से करता है। और इस प्रकार नीरसता एवं अरोचकता से अपने नाटक को बचा लेता

---

१. कृष्णदेव शर्मा - समीक्षा सिद्धांत, पृष्ठ - ३५९

है। प्रतिपादय सदैव महान और प्रभावशाली होना चाहिए। इसके साथ साथ अभिव्यक्ति की शैली और परिस्थितीयाँ भी प्रभावोत्पादक होनी चाहिए।

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने 'रातरानी' नाटक मे अनेक समस्याओ को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। इन समस्याओं का चित्रण करना ही लेखक का मुख्य उद्देश्य रहा हैं। 'रातरानी' के अन्तर्गत साधारणत: आदर्श भारतीय नारी का चित्रण, शोषक शोषित, संघर्ष, दहेज समस्या, स्वेच्छा विवाह, आर्थिक समस्या, हडताल, पारिवारिक समस्या आदि ब्योरो का विचार किया जाएगा।

७.१ आदर्श भारतीय नारी का चित्रण :

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने " रातरानी " नाटक की नायिका कुंतल को आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत नाटक में चित्रित किया है । आदर्श भारतीय नारी अपने पति को ही परमेश्वर मानती है। पति कैसा भी हो जैसे शराबी, स्वार्थी, जुआरी लेकिन उसके साथ नारी सुलभ भावनाओं के साथ बर्ताव करना ही आदर्श नारी का कर्तव्य समझा जाता है। कुंतल के माध्यम से डॉ. लाल ने 'रातरानी' नाटक में इसका चित्रण किया हैं।

'रातरानी' नाटक की नायिका कुंतल का पति जयदेव में ढेर सारी कमियाँ मोजूद है। उन कमियों में सुधार लाने का प्रयास कुंतल हरदम करती रहती है अत: उसमे आदर्श भारतीय नारी के गुण सिध्द होते हैं। जयदेव में जुआरी, शराबी ऐशोआरामी, स्त्रीलोलुप आदि कु प्रवृतियाँ मौजूद हैं, फिर भी कुंतल हमेशा जयदेव की चिंता करती है जयदेव का एक प्रेस है. प्रेस में जयदेव कभी जाता नहीं और इन कर्मचारियों को समयपर वेतन नहीं देता। तभी प्रेस में हड़ताल होती है। एक दिन

कर्मचारियों के बच्चे कुंतल के घर आते है वह उन्हें कपडा, रूपया और बगीचे के प"टभर फल देती है। कुंतल के दिल में प्रेम निर्माण होता है।

कुंतल अपने पति का हित देखना चाहती है। वह कर्मचारियों के हडताल के बारें मे जयदेव को समझाती है।

कुंतल के ही शब्दों में - "मेरे चाहने की बात खत्म हुई, मैं अब सिर्फ तुम्हारा हित सोचती हूं।"[1]

जयदेव ही कुंतल का परमेश्वर हैं। इसलिए कुंतल जयदेव के हित के बारे में सोचती रहती है। हडताल बंद हो जाय और मजदूर लोग प्रेस के काम पंर पग जाय। कुंतल हडताल के बारे में जयदेव को समझाने की कोशिश करती है। कुंतल को अपने द्वारे में कोई चिंता नहीं है। मगर पति के बारे में चिंतीत रहती है। कुंतल कहती है" - "चिंता मूझे जय की है अपने महान दिवंगत पिता के स्वप्न की है, बोलो मै इसके लिए क्या करूँ बाबा।"[2]

जयदेव के पिता इंजिनियर साहब ने जयदेव के नामपूर बैंक में ७५ हजार रूपये छोडकर गये है। जयदेव शराब पिता हैं, ताश खेतला है, जुआ खेलता है, वह उसमें ७५ हजार रूपये उडाता है। प्रेस में कभी-कबार जाता है मगर प्रेस चलाने का कौशल उसमें नही है। इसलिए प्रेस के सामने नहीं जाना चाहता। उन्हें गालियाँ देता हैं। जयदेव मजदूर के सामाने नहीं जाना चाहता। उन्हे गलियाँ देता हैं। मजदूरों के साथ घटिया व्यवहार करता है। जुलूस के सामने कुंतल जाना चाहती हैं। जुलूस उनके घर सामने आया है और मजदूर लोग नारे लगाते हैं। जयदेव कुंतल को जुलूस के सामने न जाने के लिए मना करता हैं, उसे रोकने की कोशिश करता है। उस समय माली से कुंतल कहती है। कि " माली बाबा। मेरे आँचल में केसर का वह पुष्प डालो।"[3]

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - " रातरानी " पृष्ठ ७०
२. वहीं वहीं पृष्ठ १०७
३. वहीं वहीं पृष्ठ ११८

माली बगीचे से केसर पुष्प ले आता है, कुंतल उसे अपने आँचल में बांध लेती है। केसर का पुष्प जयदेव का प्रतीक के रूप में नाटककार ने माना है। जयदेव की रक्षा करने की जिम्मेदारी माली बाबा पर छोडकर कुंतल स्वयं जुलूस के सामने निकल जाती है। जयदेव कुंतल को रोकना चाहता हैं मगर वह रोक नहीं पाती। कुंतल कहती है कि --- " मुझे जाना है। बाबा तुम यहाँ से हटना नही जय को देखना मैं तुम्हे सौंपिकर जा रही हूँ।"[1] वह अपने पति को परमेश्वर मानती हैं। तेजी कुंतल निकल जाती है। जुलूस का शोर पुरे वातावरण मे छा जाता हैं। नारे बुलंद होते है। कुंतल के पिछे जयदेव जाने की कोशिश करता है, मगर माली उसे जाने नहीं देता। जुलूस में पत्थर बाजी होती हैं पुलिस लाठी चार्ज करती है। एका एक न जाने कहाँ से एक पत्थर कुंतल के सिर पर लग जाता है। कुंतल भीड मे गिर पडती है। अकेली कुंतल मारी चोट सह लेती है। निरंजन और माली उसकी रक्षा के लिए चले आते है। कुंतल घायल होती है। थोडी देर मे उसे होश आ जाता है। कुंतल उठने की कोशिश करती है। माली उसे पिछे से सम्हाल लेता है। माली कुंतल को उठने के लिए मना करता है मगर कुंतल कहती है....

माली बाबा मुझे उठने दोन। मै आज अपने आप को देखना चाहती हूँ। कुंतल जयदेव को देखती है और कहती हैं --------" चोट सिर्फ

---

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल " रातरानी " पृष्ठ ११९

मेरे माथेपर ही है।......"।[1] मुझे ही चोट लगी है और माथेपर है मैं अपने केशार के फुल को चोरट नहीं पहुँचना चाहती हूँ।

केसर का फूल अपने पति जयदेव के प्रतीक को लिया गया है। फुल को कुछ नहीं हुआ है वह तो मेरे आँचल में बंधा है।

आदर्श भारतीय नारी अपने को अपना सबकुछ मानती किसी भी संकट, समस्या, दुःख स्वंय सह लेती है। मगर अपने पति को दुःखी नहीं देखना चाहती और पति को चोट भी नहीं पहुँचाती। इस आदर्श नारी गुणों के साथ-साथ कुंतल आदर्श सहेली भी है। आदर्श संगीत तज्ञ को है, और अपने माली मजदूर के प्रति प्रेमपूर्वक व्यवहार करतो है। आदर्श भारतीय नारी के गुण कुंतल मे दिखायी देते हैं। नाटककार ने कुंतल के माध्यम से आदर्श भारतीय नारी का चित्रण किया है। और यही लेखक का प्रमुख उद्देश्य है।

७.२. शोषक-शोषित संघर्ष को उजागर करना :

शोषक-शोषित संघर्ष भारत देश की पुरानी समस्या है। वर्तमान परिस्थिती में भी वह संघर्ष बडी मात्रा में पाया जाता है। पूँजीवादी लोग मजदूर लोगों का शोषण करते है लेकिन हमारी सरकार इस व्यवस्थापर ध्यान नहीं देती। इसी तथ्य को डा. लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने " रातरानी " नाटक में उजागर किया है। नाटककार ने इस संघर्ष को सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख समस्या के रूप मे लिया है। इससे मजदूरो का शोषण प्रस्तुत नाटक में दिखायी देता है। आलोच्य नाटकका नायक जयदेव है। उसके प्रेस में लगभग १०० मजदूर कार्यरत हैं। जयदेव प्रेस मजदूरों को बोनस तो क्या समय पर वेतन तक नहीं देता। इसलिए प्रेस के मजदूर लोग हडताल करते हैं। हडताल पर जयदेव होटल में जाकर ताश खेलता है, जुआ खेलता है, शराब पीता

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल— रातरानी, पृष्ठ-१२०

है। मगर अपने प्रेस मजदूरों के हडताल के बारें में सोचता ही नहीं ।
वह एक पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है। एक दिन मजदूर जयदेव का पीछा करते-करते उसके घर तक आते है। जयदेव मजदूरों को गालियाँ देता उनके साथ बद्तमीजी करता है। मजदूर लोग कुंतल से कहते है— " मालिकन प्रेस में हडताल चल रही है । हमारे दो आदमी पिछले तीन दिनों से भूख हडताल में पडे हैं... और इन्हे इन सब बातों से कोई सरोकार नहीं। "[1]

जयदेव मजदूरों को पूछता तक नहीं कि तुम्हारी मुसीबते क्या हैं? उनकी माँगों की तो बात ही दूर रही है । जयदेव प्रेस को ताला लगाकर होटल हवेली में रंगरंगलियाँ करता है। मजदूरों को गालियाँ देता है, मजदूर लोग कुंतल से कहते है कि जयदेव को हमरी माँगे पूरी हो जाय और फिर से प्रेस चलता रहेगा मगर जयदेव तो ध्यान ही नहीं देता। इनके मुँह से सदा गोलियाँ निकलती है। जयदेव को समझा दीजिए। मजदूर कहते हैं— "मालकिन इन्हे मना कीजिए ये अपनी जबान सम्हालकर बाते किया करे नहीं तो......।"[2] इससे स्पष्ट है कि वर्तमान स्थिति में शोषित भी संघर्ष पर उतर आते हैं।

एक दिन ऐसा ही होता है कि मजदूर लोग जूलूस निकालकर जयदेव के घर आते हैं । और गंदे नारे लगाते हैं। " उस समय जयदेव मजदूरों के सामने नहीं जाना चाहता। उसकी पत्नी कुंतल मजदूरों के सामने जाती है। उसे चोट पहुँचती है, बडा जल्लोष होता है। उसमें कुंतल बेहोश होती है। मगर जयदेव में कुछ परिवर्तन नहीं होता। आज भी देश में यही स्थिती है। मालिक लोग मजदूरों का शोषण बड़ी मात्रा में कर रहे हैं।

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल— रातरानी, पृष्ठ-८०

२. वहीं पृष्ठ-८०

७.३ दहेज समस्या :

मानव मन की सुख की लालसा आजकल बहुत बढ़ी हुई दिखायी देती है। बिना श्रम के वह एकदम अमीर बनना चाहता है। विवाह की दुनिया में यदि लडका इंजिनियर, डॅाक्टर अमीर हो तो उसकी दहेज की लालसा की तो सीमा ही नहीं होती। वैसे तो हर एक माता-पिता चाहते हैं कि अपनी लाड़ली बेटी ससुराल में सुखी रहे इसलिए वे कभी कभी ऋण निकालकर जीवनावश्यक चीजें नगद रूपये गहने आदि उसे विवाह में उपहार के रूप में दे देते हैं। दुर्भाग्यवश कभी कभी वर पक्ष की अतृप्ति बढती ही जाती है। वे बार बार कुछ न कुछ मॉंगें करते ही रहते हैं। उनकी मॉंगें पूरी न होनेपर वे वधू को मानसिक शारिरिक कष्ट देते हैं, जिससे वधु के माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्य भी चिंता में डूब जाते हैं।

प्रस्तुत नाटक की नायिका कुंतल तथा निरंजन के माध्यम से दहेज प्रथा की समस्या को उठाया है। कुंतल की शादी निरंजन के साथ तय होती है। कुंतल के पिता लडकेवालों को अपनी खुशी से पॉंच हजार रूपये दहेज में दे रहे थे किंतु लडके के पिता एडवोकिट साहब आठ हजार से एक रूपया भी कम नहीं लेना चाहते इसकी वजह से प्रस्तुत नाटक की नायिका कुंतल की बनी बनायी शादी टूट जाती है। वह दहेज की शिकार बनती है। कुंतल के पिताजी यह आघात सह नहीं सकते उसी में उनका देहान्त हो जाता है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए कुंतल कहती हैं —— " दहेज में रूपयों की कमी के कारण शादी टूट

गयी मेरे पिताजी लडकेवालों को अपनी खुशी से पाँच हजार रूपये दहेज में दे रहे थे। किंतू लडके के पिता एडवोकेट साहब आठ हजार रूपये से एक रूपया भी कम नही कर रहे थे ....मेरे ब्याह का स्वप्न लिये हुए पिताजी स्वर्ग चले गये।"[1] वर्तमान परिस्थिति में यही स्थिती सभी ओर है। प्राचीन काल से चली आयी यह दहेज प्रथा आज हमारे समाज के लिए अभिशाप सिद्ध हो रही है। यह दहेज प्रथा एक भयानक विषाणू की तरह समाज को चारों ओर से कुरद रही है, इसे किसी ने रोकना ही होगा।

७.४ स्वेच्छा विवाह :

वर्तमान समाज में विवाह की दो ही प्रथाएँ प्रचलित हैं, एक परम्परागत भारतीय पध्दति, जिसमें लडके लडकियों को अपने माता-पिता या अभिभावकों की इच्छानुसार विवाह करना होता है। इसमें आपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता नहीं होती । दुसरे विवाह में लडके लडकियों को अपना जीवन साथी स्वंय चुनने की स्वतंत्रता होती है। इसे प्रेमविवाह भी कहा जा सकता है। ऐसा हा विवाह " रातरानी " नाटक में सुंदरम और निरंजन का होता है वे एक दूसरे को चाहते हैं और आपस मे प्यार करते हैं। विवाह के पहले से ही वे एक दूसरे को पहचानते हैं, जानते हैं। उनका विवाह अपनी इच्छा के अनुसार होता है। वे दोनो जात-पात नहीं मानते। इनका विवाह कुंतल की साक्षी मे होता है। कुंतल इसे पुष्टि देते हुए कहती है " प्यार वहीं प्रेम जो दोनो को संपूर्ण करता है, दोनो को मुक्ति देता है। सुंदरम तुमसे बहुत प्रभावित है। तुमसे मिलने से पूर्ण उसे विवश विश्वास हो गया था कि इस समाज में अब ऐसे पुरूष नही जिनसे सचमुच

---

१ डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल— रातरानी, पृष्ठ-३७

ब्याह किया जाय।"[1]

७.५ नारी जीवन के बदलते मूल्यों को चित्रित करना :

नारी जीवन की नवीन युग चेतना पाश्चात्य संस्कृति का व्यापक प्रभाव नारी शिक्षा एवं अधिकार समता की भावनाओं के नारी समाज जीवन की समस्याएँ और उलझने एक नये रूप में भारतीय समाज में उपस्थित कर दी। आदि काल से चले आये पुरूष के दुर्दमनीय भुखे अहंकार और आधुनिक काल की शिक्षा दीक्षा तथा आर्थिक सामाजिक स्वतंत्रता से अर्जित स्त्री के आत्म निर्भर जागरूक व्यक्तित्व की स्वाभाविक टकराहट के साथ साथ आज के जीवन एवं परिवेशों के दबावों से उत्पन्न आन्तरिक तथा बाहय संघर्ष ने परस्मरागत सम्बन्ध रूपों और मूल्यों को समूल हिलाकर रख दिया है। फलस्वरूप कई नई गम्भीर समस्याएँ उद्भुत हुई है। विफल दाम्पत्य में जीवन गैरकानूनी शारीरिक सम्बन्ध के कारण उत्पन्न अवैध संतानो के सम्बन्ध में आविर्भूत नवीन विचारधारा तलाक जैसी स्थितियों ने इस वर्ग की समस्याओंको एक नवीन विषय जटिल रूप प्रदान किया हैं।

आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ नारी के दृष्टिकोन में भी परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन का परिणाम है कि अब नारी समाज के किसी भी रूढिगत निर्णय को सिरझुकाकर ही स्वीकार नहीं कर लेती है। आधुनिक शिक्षित नारी में स्वातंत्र्य की भावना तथा अपनें अधिकारों के प्रति जागरूकता आयी हैं। दिनेशचन्द्र वर्मा लिखते है —

" स्वतंत्र्यता की इन्हीं भावनाओं के कारण आधुनिक नारी

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल — रातरानी, पृष्ठ-८१

रूढीयों एव प्राचीन मान्यताओं का विरोध किया है।"[1]

प्रेम और विवाह के सम्बन्ध में आधुनिक नारी की स्वतंत्र भावना का प्रखर और दृढ स्वर हमें प्रमुखता से मिलता है। आधुनिक शिक्षित नारी को यह लगने लगा है कि अबला होने के कारण उसकी सहायता करने का अधिकार पुरूष को है इसी अधिकार के बलपर उसने उसे चरणदासी या सेविका बना रखा है इसी कारण वह विवाह के परम्परागत स्वरूप का विरोध करती है।

सुंदरम का कथन इसी ओर संकेत करता है — " पढी लिखी लडकियों का यह सारा विवाह का चक्कर बडा ही अपमान जनक है। पति के माने इज्जत मर्यादा नहीं जो विवाह के बाद नारी को मिलती है। बल्कि पति का अर्थ होते है मालिक माने खुदा नही, मालिक माने गुलामवाला मालिक क्योंकि पिछले करीब एक हजार वर्षों से हमारे समाज का मन सिर्फ मालिक और गुलाम ही देखता आया है। वही एक मर्यादा, वही एक सम्बन्ध। "[2]

७.६ आर्थिक समस्या का चित्रण :

आर्थिक समस्या सबसे जटिल एवं बडी समस्या है। समाज में सबसे ज्यादा महत्व धन को दिया जाता है, और अर्थव्यवस्था आज वह धुरी बन जाती हैं। जिस के द्वारा समाज में व्यवहार सम्बन्ध रिश्ते आदि सभी निर्धारित होते है। मनुष्य की दृष्टि अर्थोन्मुख होने के कारण ही संयुक्त परिवारों में दरार पड कर अब अलग अलग

---

१. डा. दिनेश चंद्र वर्मा 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक और समाधान' पृष्ठ७६

२. डा. लक्ष्मीनारायण लाल रातरानी पृष्ठ ३९-४०

छोटे -छोटे परिवार दिखाई पड रहे हैं। विषम अर्थव्यवस्था के कारण अनेक मध्य, निम्नमध्य वर्ग परिवारों को कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पडता है। रूपयो के पीछे पडे अनेक परिवार के माता-पिता, भाई बहन पति-पत्नी आदि सभी रिश्ते कमजोर बने दिखायी देते हैं। बेकारी और विषम अर्थव्यवस्था के कारण लोग घुट घुट कर मर रहे हैं। साथ-साथ वे असहाय और एक दूसरे से अजनबी बनकर अपना अस्तित्व नष्ट कर बैठे है।

आर्थिक समस्या तो " रातरानी " नाटक की महत्वपूर्ण समस्या है। जब कुंतल का विवाह उसके पिता निरंजन के साथ तया करते है उसके पिता दहेज में खुशी से पाँच हजार रूपये दे रहे थे मगर लडकेवाले आठ हजार रूपयों में से एक रूपया भी कम नही कर रहे थे। इसलिए कुंतल और निरंजन की शादी नही हो पायी। रूपया सबसे महत्वपूर्ण है।

कुंतल का पति जयदेव ताश खेलता है, जुआरी बन जाता है, इसलिए उसके घर की आर्थिक स्थिति बिगड जाती है। जयदेव पैसों के लिए लालसी बन जाता है। जयदेव अपनी पत्नी को नौकरी करने के लिए कहता है। जयदेव के प्रेस में मजदूरों का समयपर वेतन नहीं देता। परिणाम स्वरूप मजदूर जुलूस निकालते हैं।

आर्थिक परिस्थिति के कारण मजदूर लोग संतप्त होकर अपनी माँगो को पूरा करना चाहते हैं। एक दिन मजदूर जयदेव को मारना चाहते हैं। जयदेव अपनी आर्थिक समस्यों के कारण जुलूस के सामने नहीं जाना चाहता । मजदूरलोग भूखों मर रहे हैं, उनके बच्चों को पहनने के लिए कपडा भी नहीं मिलता। मजदूरों के शब्दों में " हमारे दो आदमी पिछले तीन दिनों से भूख हडताल में पडे हैं, और इन्हें इन सब बातों से कोई सरोकार नहीं।"[1]

---

1. डा. लक्ष्मीनारायण लाल रातरानी पृष्ठ ६0

इस तरह आर्थिक समस्या को उद्देश्य के रूप में प्रस्तुत किया है।

७.७ हड़ताल समस्या :

हडताल यह पुरानी समस्या है। पूँजिपति लोग अपने मजदूरों को समयपर वेतन महँगाई भत्ते बोनस नहीं देते। बढती हुई महँगाई के बराबर वे महँगाई भत्ता नहीं देते । इसलिए मजदूर लोग हडताल, भूख हडताल करते । कामपर नहीं जाते, काम बंद हो जाता है। इसमें मजदूर को कारखानदार को और देश को धोका और हानी पहुँचती है। कई पूँजिपाति और हमारी शासन व्यवस्था उनपर ध्यान नहीं देती। इस समस्या के कारण हमारे देश के कई उद्योग आज भी बंद हैं। इससे बेकारी बढ़ रही है। मजदूर के परिवार के लोगों को समय पर खाना भी नहीं मिलता। यह समस्या हमारे देश के अवनति की ओर ले जाती है। देश की अर्थव्यवस्थापर कुप्रभाव पडता है। यह समस्या परम्परा के साथ भी हमारे देश में प्रचलित है। यही समस्या " रातरानी " नाटक में भी दिखाई देती है। नाटक का नायक जयदेव का एक बडा प्रेस है। उसमें कम से कम सौ लोग काम करते हैं। जयदेव प्रेस मजदूरों को समयपर वेतन और महँगाई भत्ता नहीं देता इसलिए मजदूर लोग भूख हडताल और जुलूस निकालते है।

एक दिन प्रेस के मजदूर जयदेव के घरपर जुलूस निकालते हैं, तब कुंतल को मालुम पडता है कि प्रेसमेंभूख हडताल हो रही है। जयदेव और मजदूरों के बीच कुंतल समझौता करती है। मजदूर लोग कुंतल का कहना मानते है फिर से प्रेस चलती रहती है मगर कुछ दिनों के बाद पहली जैसी स्थिति होती है। कुंतल के ही शब्दों मे -

" जयदेव का यह कहना है कि पहले हडताल खत्म हो मान जाओ इतनी सी बात... फिर आगे मैं देखूँगी ।"[1]

प्रेस की अर्थव्यवस्था पर कुप्रभाव पडता है। एक दिन संतप्त मजूदूर लोग जुलूस निकालकर जयदेव के घर जाते हैं। मगर जयदेव जुलूस के सामने नहीं जाना चाहता है। उस की पत्नी कुंतल जुलूस के सामने जाती है। संतप्त मजदूर लोग पत्थर फेंकते, पूलिस लाठी चार्ज करती है। इसीप्रकार कारखानों मे यह हडताल समस्या आज भी विद्यमान है।

७.८ पारिवारिक समस्या :

परिवार से सम्बन्ध रखनेवाली जो समस्या होती है उसे पारिवारिक समस्या कहा जाता है। परिवार मे कई समस्याएँ होती है।

नाटक के आरंभिक काल में नाटक मनोरंजन का एक साधन माना जाता था। मगर जैसे जैसे नाटक के क्षेत्र में वृध्दि होती गयी वैसे-वैसे नाटककारों ने अपने नाटकों में समाज में स्थित अनेक सामाजिक समस्याओं का जिक्र किया । आजकल पुरान इतिहास को माध्यम बनाकर आधुनिक कालीन सामाजिक समस्याओं का चित्रण नाटकों में किया जाने लगा है। सामाजिक समस्याओं और विभक्त पपिरवार पध्दति आदि समस्याओं को रखा जा सकता है।

डा. लक्ष्मीनारायण लाल जी ने " रातरानी " नाटक मे पारिवारिक समस्या का इसप्रकार आविर्भाव किया है।

जयदेव के परिवार मे सिर्फ तीन लोग है, पत्नी और बगीचे का का करनेवाला माली यही दो और स्वयं। मगर इस परिवार मे बहुत

---

१ डा. लक्ष्मीनारायण लाल — रातरानी, पृष्ठ– ६२

सी समस्या दिखाई देती है। आर्थिक समस्या, दहेज समस्या, हडताल समस्या आदि समस्या आलोच्य नाटक में दिखाई देती है।

आर्थिक समस्या ने इस नाटक में भयानक रूप ले लिया है। अर्थ के कारण कुंतल का निरंजन के साथ होनेवाली शादी टूट जाती है। आर्थिक समस्या के कारण जयदेव के प्रेस के मजदूर हडताल करते है।

जयदेव ताश खेलता है, जुआरी बन जाता है, होटल में जाकर रगरंगेलियाँ करता है। समयपर घर में नहीं आता। इससे नाटक के पहले अंक से अंतिम दृश्य तक पति पत्नि में संघर्ष जारी रहता है। इस संघर्ष में एक दिन जयदेव कुंतल के चरित्र के बारें में शक लेता है कि तुम्हारी पहली शादी पक्की हुई वही तुमने कुछ खत लिखे थे। यह सब मुझे मालूम है। भेजे हुए सभी पत्र कुंतल निरंजन से वापस लेती हैं. उन्हे पढ़कर सुनाती है। पत्र पढ़कर जयदेव की समस्या का समाधान होता है। जयदेव को लगता था कि कुंतल निरंजन से प्यार करती है। मगर कुंतल ने निरंजन से को अपने होनेवाले पति के नाते वह खत लिखती है, प्यार से लबालब खत कुंतल नहीं लिखती।

जयदेव अपने मित्र योगी और प्रकाश के साथ ताश जुआ, खेलकर कुंतल को दुख पहुचाता है। ऐसी पारिवारिक समस्या का चित्रण करना ही डा. लाल का उद्देश्य रहा है।

७.९ वर्गहीन समाज की प्रतिष्ठापना :

युगों-युगों से आज तक हमारा समाज उच्च वर्ग और निम्नवर्ग में विभाजित है। उसीप्रकार वह अन्य वर्ग में भी विभाजीत दिखायी देता है। लेकिन आधुनिक काल में यह वर्गभावना ज्याद ही बलवत्तर होती होती गयी। लेकिन वर्तमान परिस्थिति में अनेक लेखक रचनाकारों ने समाज में मानवतावाद की प्रतिष्ठापना करने हेतु अपनी रचना में विवेचन - विश्लेषण

किया है। " रातरानी " नाटक शोषक-शोषित संघर्षपर आधारित है। लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने नाटक में मानव मूल्यों का उद्घाटन करने हेतु माली नामक साधारण अशिक्षित व्यक्ति का चयन किया है। वे उसके माध्यम से वर्गहीन समाज की प्रतिष्ठापना करने का प्रयास किया है। जब कुंतल और माली के बीच वार्तालाप चल रहा था उस वक्त माली इंजीनियर साहब की भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहता है — " साधू तुम मेरे बगीचे के माली ही नही इस पूरे घर के मालिक हो। धन्य थे वे। बहुत बडी आत्मा थी उनकी। कहाँ वे ब्राह्मण, कहाँ मै रैदास। माँ। मालिक कहा करते थे मनुष्य ईश्वर कि लिखी हुई एक पाती है - हमे पाती का मजमून देखना चाहिए, उसकी जात पात रूप-रंग देखने से क्या मालिक मेरे असली गुरु थे माँ। "[1]

इससे स्पष्ट है कि लेखक ने इंजीनियर साहब तथा माली के माध्यम से वर्गहीन समाज की प्रतिष्ठापना करना चाहा है।

७.१० भूख समस्या :

भूख हमारे देश की ज्वलंत समस्या है। वर्तमान परिस्थिति मे व जाने कितने ही भुक्खड लोग भूख के कारण मर जाते है। आजकल इस समस्या को लेकर अनेक रचनाकारों ने लिखा है। डा. लाल ने भी "रातरानी " के अन्तर्गत आलोच्य समस्या को उठाया है। जब प्रेस कर्मचारियों के बच्चे भूखे-प्यासे कुंतल के पास आते हैं। तब वह उन्हें खाने के लिए कुछ फल तथा पहनने के लिए कपडे देती है। तब जयदेव उसके खिलाफ बोलता है। उसे समझाने के लिए कुंतल जयदेव से कहती है — " उस दिन कर्मचारियों के बच्चे यहाँ सुबह ही सुबह आये। मुझ "माताजी माताजी माँ माँ कहकर पुकारने लगे। किसी के तन पर न ठीक से कोई कपडा था न किसी का पिछले चार दिनो से पेट भरा था। सब नंगे

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल — रातरानी, पृष्ठ-५०

और भूखो क्या करती मैं। १ "[2] इस उदाहरण में भूख समस्या का पर्दाफाश किया जा सकता है। साथ ही साथ लेखक का कानुन, पुलिस, राजनेता तथा भ्रष्ट अफसरो पर व्यंग्य करना भी प्रमुख उद्देश्य रहा है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त ब्योरों का विवेचन विश्लेषण करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष तक पहूँचे है कि डा. लाल अन्य नाटककारों की कोटि में अग्रणी है। उन्होंने अपने नाटक " राजरानी " में वर्तमान परिस्थिति में स्थित अनेकविध समस्याओं के माध्यम से उद्देश्य की पूर्ति की है। उन्होंने आदर्श भारतीय नारी का चित्रण किया है। शोषक-शोषित संघर्ष को उजागर किया है, दहेज समस्या, स्वेच्छा विवाह, आर्थिक समस्या, हडताल समस्या, पारिवारिक समस्या, भूख समस्या, आदि को चित्रित किया है। डॅा. लाल " रातरानी " में अपनी उद्देश पूर्ति मे काफी सफलता पा चुके हैं।

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल — रातरानी,- पृष्ठ-२५